लघु अनन्तवीर्य

जीवन-परिचय : जैन न्याय-साहित्य के इतिहास में दो अनन्तवीर्य आचार्यों का उल्लेख मिलता है। इनमें से एक अनन्तवीर्य वे हैं जिन्होंने अकलंकदेव के सिद्धिविनिश्चय पर टीका लिखी है और दूसरे अनन्तवीर्य वे हैं जिनका वर्णन हम कर रहे हैं। इन्होंने प्रमेयरत्नमाला ग्रन्थ लिखा है। इन्हें लघु अनन्तवीर्य या द्वितीय अनन्तवीर्य भी कहा जाता है।

लघु अनन्तवीर्य का समय विक्रम की 12वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

रचना-परिचय : लघु अनन्तवीर्य की एकमात्र रचना 'प्रमेयरत्नमाला' है—

प्रमेयरत्नमाला : प्रमेयरत्नमाला को 'परीक्षामुखपंजिका' भी कहा है और कहीं-कहीं पर इसे 'परीक्षामुखलघुवृत्ति' भी कहा है, क्योंकि यह परीक्षामुखसूत्र की टीका है। यह रचना जैन न्याय के पढ़ने वालों के लिए विशेष उपयोगी है। आचार्य अनन्तवीर्य ने इस ग्रन्थ की रचना राजा हीरप के पुत्र शन्तिषेण को पढ़ाने के लिए की थी। प्रमेयरत्नमाला ग्रन्थ का विषय परीक्षामुख ग्रन्थ के समान ही प्रमाण और प्रमाणाभास पर आधारित है।